ग्लैडियोलस की व्यावसायिक खेती

महेश चौधरी*, अनोप कुमारी** और **आर.के. दुलड़***

कर्तित पुष्प वाली फसलों में ग्लैडियोलस का महत्वपूर्ण स्थान है। यह इरिडेसी कुल का पौधा है एवं इसे कन्दीय फूलों की रानी भी कहा जाता है। 'ग्लैडियोलस' शब्द लैटिन भाषा के शब्द 'ग्लैडियस' से बना है, जिसका अर्थ 'तलवार' होता है क्योंकि इसकी पत्तियों की आकृति तलवारनुमा होती है। कुछ खास विशेषताओं जैसे पुष्पकों के विभिन्न रंग, आकृति, आकार तथा पुष्पदंडिका की अधिक समय तक तरोताजा रहने की क्षमता के कारण यह बहुत लोकप्रिय है।

ग्लैडियोलस के आकर्षक फूल जिन्हें फ्लोरेट्स कहते हैं, पुष्पदंडिका (स्पाइक) पर विकसित होते हैं। इनकी संख्या 8-16 तक होती है। ग्लैडियोलस से तैयार गुलदस्तों की मांग काफी रहती है, इसके कारण कृषकों को इस फसल सें अच्छा मुनाफा मिल जाता है।

भूमि एवं जलवायु

अच्छे जल निकास वाली, दोमट अथवा बलुई दोमट मृदा, जिसका पी.एच. 6.0-7.5 के मध्य हो, उत्तम मानी जाती है। चिकनी व भारी मिट्टी में घनकंदों में सड़न पैदा हो जाती है व पौधों की समुचित बढ़वार नहीं हो पाती है। अत्यधिक अम्लीय अथवा क्षारीय मृदा खेती के लिए उपयुक्त नही होती है। मध्यम आर्द्रता वाले क्षेत्र इसकी खेती के लिए उपयुक्त माने जाते हैं। फसल की समुचित बढ़वार के लिए 24-30° सेल्सियस तापमान सर्वोत्तम होता है।

किस्में

ग्लैडियोलस की कई उन्नतशील किस्में मौजूद हैं। इनका चयन रंग अथवा पुष्पण के समय के आधार पर कर सकते हैं। अर्का अमर, अर्का गोल्ड, अप्सरा, आरती, अर्चना, अर्का नवीन, पूसा शुभम, पूसा सुहागन, पूसा किरण, पिंक फ्रैंडशिप, फ्रैंडशिप व्हाइट, अमेरिकन ब्यूटी, सपना, नजराना, मीरा, पूसा उन्नति, पूसा मनमोहक, समर पर्ल, रोज सुप्रीम, स्नो व्हाइट, हरमैजेस्टी, पूसा रेड वैलेंटाइन, ज्वाला, मनोहर, मुक्ता, मनमोहन आदि महत्वपूर्ण प्रचलित किस्में हैं।

ग्लैडियोलस के विविध किस्मों के सुंदर फूल

आकर्षक ग्लैडियोलस

प्रवर्धन

ग्लैडियोलस का प्रवर्धन घनकंदों (कार्मस) द्वारा किया जाता है। घनकंद अलग-अलग व्यास (सारणी 1) के होते हैं, जो उत्पादन को प्रभावित करते हैं। गुणवत्तायुक्त पैदावार के लिए घनकंदों का व्यास 4-5 सें. मी. होना चाहिए। छोटे घनकंद जिन्हें कारमेल कहते हैं, फूल उत्पादन के योग्य नहीं होते हैं।

बुआई का समय एवं तरीका

मैदानी भागों में इसकी बुआई सितंबर से नवंबर माह में करते हैं। बुआई हेतु घनकंद स्वस्थ व रोगमुक्त होने चाहिए। बुआई से पूर्व घनकंदों को बाविस्टिन या डाइथेन एम.-45 के 0.2 प्रतिशत के घोल में 30-40 मिनट तक उपचारित करके छायादार स्थान पर सुखा लें। घनकंदों की तैयार क्यारियों अथवा डालियों की 30 × 20 सें.मी. की दूरी पर बुआई करें। इनकी गहराई उनके व्यास पर निर्भर करती है। सामान्यत: इन्हे 6-8 सें.मी. गहरा लगाया जाता है।

खाद एवं उर्वरक

संतुलित मात्रा में खाद एवं उर्वरकों का प्रयोग पौधों की अच्छी बढ़वार एवं उत्पादन के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। खेत तैयार करते समय सामान्यत: 15-20 टन अच्छी सड़ी गोबर की खाद मिट्टी में मिला दें। खाद के अलावा 120 किलोग्राम नाइट्रोजन, 80 किलोग्राम फॉस्फोरस व 60 किलोग्राम पोटाश प्रति हैक्टर की दर सें प्रयोग करें। नाइट्रोजन की आधी मात्रा तथा फॉस्फोरस व पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय डाल दें। शेष बची नाइट्रोजन की मात्रा को दो भागों में बांटकर बुआई के 30 व 60 दिनों बाद, प्रथम मात्रा 4-6 पत्तियां आने पर व शेष मात्रा मिट्टी चढ़ाते समय प्रयोग करें।

सिंचाई

प्रथम सिंचाई घनकंदों के अंकुरण के

*कृषि विज्ञान केन्द्र, अरनियां-श्रीमाधोपुर, सीकर-II, 332603 (श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय, जोबनेर-राजस्थान); **कृषि विज्ञान केन्द्र, मौलासर, 341506-नागौर-II (कृषि विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान)

फायदेमंद है ग्लैडियोलस की खेती

सारणी 1: घनकंदों का व्यास के आधार पर वर्गीकरण			
घनकंद आकार	**श्रेणी**	**घनकंद का व्यास (सें.मी. में)**	**उपयोग**
बड़े आकार	जम्बो	5.1 से अधिक	फूल उत्पादन के लिए
	नंबर-1	3.1 से 5.1	
मध्यम आकार	नंबर-2	3.2 से 3.8	
	नंबर-3	2.5 से 3.2	
छोटे आकार	नंबर-4	1.9 से 2.5	
	नंबर-5	1.3 से 1.9	प्रवर्धन के लिए
	नंबर-6	1.0 से 1.3	

बाद करनी चाहिए व इसके पश्चात मौसम के आधार पर 7 से 10 दिनों के अंतराल पर करते रहें। पुष्पदंडिका निकलते समय खेत में उचित नमी का होना आवश्यक है। साथ ही इस बात का भी ध्यान रखें कि क्यारियों में पानी का जमाव ज्यादा समय तक न रहे। घनकंदों की खुदाई से कम से कम 4-6 सप्ताह पहले सिंचाई रोक देनी चाहिए।

मिट्टी चढ़ाना व पौधों को सहारा देना

जब पौधे 20-30 सें.मी. के हो जाएं, मिट्टी चढ़ा देनी चाहिए, जिससे ये तेज हवा या वर्षा से नीचे ना गिरें। साथ ही जिन किस्मों में पुष्पदंडिकायें ज्यादा लम्बी या तना कमजोर हों, उन्हें बांस की 1-1.5 मीटर लंबी खपच्चियों से सहारा देना चाहिए।

घनकंद (कार्मस) व छोटे घनकंद (कार्मलैट्स)

घनकंदों की खुदाई

पुष्पदंडिकाओं की कटाई

इनकी कटाई की अवस्था बाजार की दूरी पर निर्भर करती है। स्थानीय बाजार में भेजने के लिए पुष्पदंडिकाओं की कटाई, नीचे के 2-3 फ्लोरेट खुलने पर जबकि दूरस्थ बाजारों में भेजने के लिए कलियों में रंग पूरी तरह विकसित होने पर करते हैं। कटाई प्रात: अथवा शाम के समय, तेज धार वाले चाकू या सिकेटियर की सहायता से करें। काटने के तुरंत बाद पुष्पदंडिकाओं को पानी से भरी बाल्टी में रखें जिससे वे अधिक समय तक तरोताजा बनी रहें। कटाई उपरांत इनको लम्बाई व कलिकाओं की संख्या के आधार पर (सारणी 2) वर्गीकृत कर लेना चाहिए।

सारणी 2: पुष्प दंडिकाओं का वर्गीकरण		
श्रेणी	**पुष्पदंडिका की न्यूनतम लम्बाई (सें.मी.)**	**फ्लोरेट्स की न्यूनतम संख्या**
फैन्सी	107 से अधिक	16
स्पेशल	96 से 107	14
स्टैण्डर्ड	81 से 96	12
यूटीलिटी	81 से कम	10

उपज

पुष्पदंडिकाओं एवं घनकंदों की उपज, उगायी जाने वाली किस्म, घनकंदों के आकार, पौधों की संख्या और फसल प्रबंधन पर निर्भर करती हैं। उचित फसल प्रबंधन से एक हैक्टर क्षेत्रफल में लगभग 2-2.5 लाख पुष्प दंडिकाएं प्राप्त हो जाती हैं।

घनकंदों की खुदाई

पुष्पदंडिकाओं की कटाई के लगभग 60-80 दिनों बाद जब पौधे की पत्तियां पीली पड़कर भूरे रंग की होने लगती हैं, समझना चाहिए घनकंद खुदाई योग्य हो गये हैं। घनकंदों को खुरपी अथवा कुदाली की सहायता से सावधानीपूर्वक निकाल लेना चाहिए। खुदाई के पश्चात घनकंदों को उनके आकार के अनुसार अलग करके बाविस्टिन या डाइथेन एम-45 के 0.2 प्रतिशत के घोल में 30-40 मिनट तक उपचारित कर छायादार स्थान पर अच्छी तरह सुखा लें। तत्पश्चात् नेट बैग में भरकर शीतगृह में 4-6 डिग्री सेन्टीग्रेड तापमान पर भंडारण कर लेते हैं।